आदि योगी

दूर उस, आकाश की, गहराइयों में,,,
इक नदी से, बह रहे हैं, आदि योगी।
शून्य सन्नाटे, टपकते जा रहे हैं,,,
मौन से, सब कह रहे हैं, आदि योगी।
योग के इस, स्पर्श से अब,
योगमय, करना है तन मन,,,

सांस शाश्वत, सनन सननन,
प्राण गुंजन, धनन धननन।
उतरें मुझ में, आदि योगी।
योग धारा, छलक छन्न छन्न।
सांस शाश्वत, सनन सननन।
प्राण गुंजन, धनन धननन।
उतरें मुझ में, आदि योगी॥

पीस दो, अस्तित्व मेरा,
और कर दो, चूरा चूरा।
पूर्ण होने, दो मुझे और,
होने दो अब, पूरा पूरा।

भस्म वाली, रस्म कर दो, आदि योगी।
योग उत्सव, रंग भर दो, आदि योगी।
बज उठे ये, मन सितारी,
झनन, झननन, झनन, झननन।
"सांस शाश्वत, सनन सननन,
प्राण गुंजन, धनन धननन" ॥

उतरें मुझ में, आदि योगी।
योग धारा, छलक छन्न छन्न,
सांस शाश्वत, सनन सननन,
प्राण गुंजन, धनन धननन।
उतरें मुझ में, आदि योगी॥
अपलोडर- अनिलरामूर्तिभोपाल

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/18111/title/aadi-yogi

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |